ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-2* Issue-5* June-2017
Innovation The Research Concept

नेपाल और भारतः रोटी–बेटी का रिश्ता

श्याम नारायन पाण्डे
शोध छात्र,
राजनीति विज्ञान
इग्नू, दिल्ली

सारांश

नेपाल और भारत के बीच अत्यंत घनिष्ठ सबंध हैं। इन संबंधों के आधार भौगोलिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक हैं। ये सभी संबंधों के आधार इतने मजबूत हैं कि ये दोनों देश इन सभी क्षेत्रों में परस्पर निर्भर हैं। यही कारण है कि अनेक असहमतियों के बावजूद भारत–नेपाल सम्बन्ध निरंतर गतिमान हैं। नेपाल व भारत के नागरिक एक–दूसरे के देशों से व्यापार, आवास, रोजगार और सामाजिक सबंध आदि आधार पर जुड़े हैं।

भारत के लिए नेपाल का महत्व पिछले छः दशक में ज्यादा बढ़ गया है, विशेषकर सामरिक क्षेत्र में। इसका कारण चीन द्वारा तिब्बत पर अधिकार किया जाना है, क्योंकि अब चीन की सीमा नेपाल से मिलती है जो उसे नेपाल में प्रत्यक्ष हस्तक्षेप का अवसर प्रदान करती है। इसके बावजूद यह बात ध्यान देने योग्य है कि भौगोलिक निकटता, सामाजिक–सांस्कृतिक जुड़ाव और भाषाई सहूलियत के कारण नेपाल व भारत प्राकृतिक मित्र हैं। अतः दोनों देश अपार संभावनाओं के साथ अपनी मित्रता को गति दे सकते हैं।

मुख्य शब्द : नेपाल, प्राकृतिक–मित्र, माओवाद, राजतंत्र, लोकतंत्र, मुक्त–सीमा।

प्रस्तावना

हिमालय की गोद में बसा हुआ नेपाल प्रकृति के अत्यंत मनोरम दृश्यों वाला देश है। यह भारत और चीन के बीच अवस्थित एक बफर–राज्य होने के साथ–साथ एक भू–आबद्ध देश भी है। वैसे तो यह एक संप्रभु देश है, परन्तु अन्य किसी भी आधार पर यह भारत से भिन्नता नहीं रखता, अर्थात् भारत और नेपाल दोनों देश न सिर्फ राजनीतिक और आर्थिक बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से घनिष्ठता के साथ जुड़े हुए हैं। हिन्दू मान्यता के अनुसार विश्व के प्रथम राजा वैवस्वत मनु ने सतयुग में नेपाल पर शासन किया था और उस काल में नेपाल को सत्य की भूमि के नाम से संबोधित किया गया था। खैर सच्चाई जो कुछ भी हो परन्तु इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि भारत और नेपाल के सम्बन्ध हजारों वर्ष पुराने हैं।

अतः नेपाल के साथ भारत के सम्बन्ध ऐतिहासिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक आधार पर अत्यंत गहरे जुड़े हुए हैं। नेपाल की यह स्थिति निश्चित तौर पर भारत के साथ संबंधों को मजबूत बनाने में सहायक हैं। इसी का प्रभाव है कि भारत और नेपाल के बीच मुक्त–सीमा पाई जाती है। जिस कारण इन देशों के नागरिकों को यात्रा हेतु किसी भी प्रकार के वीजा–पासपोर्ट की जरुरत नहीं पड़ती है। इस कारण दोनों देशों के नागरिक बिना किसी व्यवधान के आवागमन करते हैं। इनके आवागमन का उद्देश्य व्यापार, रोजगारी, निवास और शादी–विवाह के सम्बन्ध हैं। इन सब स्थितियों के बावजूद आज नेपाल और भारत के सम्बन्ध जिस निर्णायक स्थिति में है, उससे चिंता होना स्वाभाविक है।

अध्ययन का उद्देश्य

इस अध्ययन का उद्देश्य मुख्यतः उन जटिलताओं को समझना है जो तमाम अनुकूलताओं के बावजूद भारत और नेपाल के बीच संबंधों के विकास में व्यवधान उत्पन्न कर रहे है, क्योंकि इन जटिलताओं को समझे बगैर उन्हें दूर कर संबंधों में अधिक विश्वास का वातावरण नहीं उत्पन्न किया जा सकता।

शोध– प्रश्न

यद्यपि भारत और नेपाल अनेक आधारों पर परस्पर जुड़े हुए हैं, परन्तु चीन कारक इन दोनों देशों के बीच संबंधों में एक महत्वपूर्ण व्यवधान के रूप में सामने आता है। अतः यहाँ पर मुख्यतः उन समाधानों को ढूंढने का प्रयास किया जायेगा जिनके माध्यम से इस व्यवधान को कम करके भारत–नेपाल सम्बन्ध को शीर्ष पर पहुँचाया जा सके।

नेपाल की भौगोलिक और सामाजिक स्थिति तथा उसका प्रभाव

जैसा कि पहले भी वर्णित किया जा चुका है कि नेपाल हिमालय की गोद में स्थित है, परन्तु यहाँ उसकी कुछ भौगोलिक विशिष्टता है। यह हिमालय के दक्षिणी ढाल पर स्थित है, अर्थात् नेपाल के उत्तर में हिमालय की ऊँची पर्वत श्रृंखलाएं हैं जबकि दक्षिण में नेपाल तराई क्षेत्र से होता हुआ मैदानी भाग से जुड़ जाता है। यह एक विशेष परिस्थिति है जिस कारण नेपाल की भारत पर स्वाभाविक निर्भरता है, क्योंकि उत्तर की तरफ नेपाल और चीन के बीच ऊँची पर्वत श्रृंखलाओं के कारण अनेक भौगोलिक जटिलताएं हैं जो दोनों देशों के बीच जुड़ाव में एक प्राकृतिक व्यवधान है। जबकि दक्षिण की तरफ हल्की ढाल के साथ नेपाल की सीमा भारत में समाहित हो जाती है, जिस कारण दोनों देशों के बीच परिवहन के साधन विकसित अवस्था में हैं। इस भौगोलिक अवस्था का स्वाभाविक लाभ भारत–नेपाल सम्बन्ध को प्राप्त हो जाता है। यद्यपि चीन द्वारा नेपाल में अवसंरचना विकास के अंतर्गत नेपाल–चीन के बीच परिवहन के साधन विकसित करने के लिए व्यापक मात्रा में निवेश किया जा रहा है। इसके अंतर्गत नेपाल के काठमांडू को चीन से रेलवे और सड़क मार्ग के माध्यम से जोड़ने की योजना पर कार्य किया जा रहा है।

भारत–नेपाल संबंधों को एक अन्य लाभ सामाजिक आधार पर प्राप्त हो जाता है, क्योंकि नेपाल की अधिकांश जनसँख्या हिन्दू है। अतः नेपाल की संस्कृति, त्यौहार, खान–पान इत्यादि भारत के समान ही है। इसके अतिरिक्त भाषा के आधार पर भी ये दोनों देश अत्यंत निकट हैं, क्योंकि नेपाल के लगभग सभी लोग हिंदी बोलना जानते हैं। जबकि चीन इन दोनों सन्दर्भों में नकारात्मक स्थिति में है। अतः भले ही सरकारों के बीच सम्बन्ध जैसे भी हों, नेपाल और भारत में लोगों के बीच संपर्क हमेशा बना रहता है।

भारतीय और नेपाली लोग आपस में बड़ी ही सहजता से घुल–मिल जाते हैं, यहाँ तक कि उन्हें एक–दूसरे के देश में विदेशी के रूप में नहीं देखा जाता है। इसी का प्रभाव है कि भारत में लगभग साठ लाख नेपाली नागरिक काम कर रहे हैं, इसी प्रकार लगभग छः लाख भारतीयों ने नेपाल में अपना घर बना लिया है। नेपाली लोग भारत में बिना किसी वर्क–परमिट के काम कर सकते हैं व बैंक में खाता खेल सकते हैं तथा अपनी संपत्ति रख सकते हैं। इस प्रकार की स्थिति इस कारण उत्पन्न हो सकी है, क्योंकि मुक्त–सीमा ने दोनों देशों के बीच लोगों का निर्बाध आवागमन सुनिश्चित किया है। दोनों देशों के बीच निकटता का इस बात से भी अंदाज लगाया जा सकता है कि नेपाल जाने वाले सभी पर्यटकों में लगभग बीस प्रतिशत भारतीय होते हैं, जबकि नेपाल जाने वाले पर्यटकों में से लगभग 40 प्रतिशत भारत से होकर जाते हैं।

आर्थिक क्षेत्र में भी भारत–नेपाल के सम्बन्ध व्यापक है। नेपाल में कुल प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का लगभग आधा भारत से जाता है। 1996 में भारत और नेपाल की व्यापार नीति में संशोधन किया गया, इस संशोधित व्यापार संधि का दोनों देशों के बीच व्यापार में निर्णायक साबित हुआ, क्योंकि 1996 के बाद से नेपाल द्वारा भारत में निर्यात में ग्यारह गुना की वृद्धि हुई है, साथ ही द्विपक्षीय व्यापार में भी सात गुना से अधिक की वृद्धि हुई है।

नेपाल में राजनीतिक–विकास क्रम

नेपाल का अस्तित्व हजारों वर्षों से रहा है तथा इस पर अनेकों राजवंशों ने शासन किया है, यथा– लिच्छवी, ठाकुरी, मल्ला, शाह आदि। परन्तु इनमें सबसे महत्वपूर्ण शार–राजवंश (अंतिम राजवंश) था, इसकी स्थापना 1769 ई.में हुई जबकि वर्ष 2006 ई.–में लोकतंत्र की स्थापना तक इसका कार्यकाल रहा। वर्ष 2006 ई. में नेपाल में लोकतंत्र की स्थापना के साथ ही राजतन्त्र को समाप्त कर दिया गया, परन्तु यह बात ध्यान देने योग्य है कि नेपाल में लोकतंत्र की स्थापना का यह मार्ग अत्यंत संघर्ष भरा रहा है।

भारत में लोकतंत्र की स्थापना का प्रभाव नेपाल पर भी देखने को मिला था, इसी कारण नेपाल में राजशाही के खिलाफ संघर्ष की शुरुआत 1950 ई. में ही प्रारंभ हो गयी थी। इस लोकतान्त्रिक संघर्ष में जनता को आंशिक सफलता मिली, परन्तु यह अधिक समय तक नहीं चल सकी और एक दशक में ही समाप्त कर दिया गया। सन 1960 ई. में नेपाल में तत्कालीन नरेश महेंद्र ने नेपाली जनता से समस्त लोकतान्त्रिक अधिकार छीन लिए और पंचायती–व्यवस्था थोप दी। यह एक निरंकुश व्यवस्था थी, जिसने अधिकारियों के मनमानीपन को बढ़ावा दिया। राजशाही द्वारा थोपी गयी यह व्यवस्था तीस वर्षों तक जारी रही। अंततः 1990 ई. में राजतंत्र को लेकर पुनः आन्दोलन तीव्र हुआ, जिसके परिणामस्वरूप पूर्व की निर्दलीय पंचायती व्यवस्था के स्थान पर नेपाल में बहुदलीय पंचायती व्यवस्था की स्थापना की गयी।

1990 ई. का यह आंशिक लोकतान्त्रिक परिवर्तन भी वर्ष 2005 में समाप्त कर दिया गया। दरअसल नेपाली राजवंश में हुई हत्या के पश्चात् सत्तासीन हुए शासक ज्ञानेंद्र ने इसके पीछे अनेक तर्क देकर लोगों का विश्वास जीतना चाहा। परन्तु ये सभी बातें तब झूठी साबित होने लगीं जब नेपाल नरेश ने शासन पर पूरी तरह कब्जा जमाकर आपातकाल की घोषणा कर दी। इसके पीछे उनका मानना था कि ऐसा करना नेपाल के माओवादियों पर काबू पाने के लिए जरुरी है। जबकि असलियत जगजाहिर था, दरअसल नेपाल के राजा वीरेन्द्र और उनके परिवार की हत्या के पश्चात् ही राजा ज्ञानेंद्र की मंशा नेपाल पर निरंकुशता कायम करना था। इसी कारण उन्होंने वर्ष 2002 ई. में संसद को भंग कर दिया था तथा 2005 ई. में लोकतंत्र पूर्णतः समाप्त कर दिया। इसके साथ ही 2006 में नेपाल में लोकतान्त्रिक संघर्ष प्रारंभ हुए और साथ ही राजा ज्ञानेंद्र पर अंतर्राष्ट्रीय दबाव भी बनने लगा, परिणामस्वरूप नेपाल में आपातकाल को समाप्त कर लोकतंत्र की स्थापना की घोषणा कर दी गयी।

नए नेपाल का उदय

वर्ष 2008 ई. में नेपाल में संविधान सभा का गठन हुआ, परन्तु यह निर्धारित कार्यकाल में संविधान का निर्माण नहीं कर सकी व इसके कार्यकाल को कई बार बढ़ाना पड़ा। तब से लेकर अभी तक नेपाल में अनेकों बार चुनाव हो चुके है तथा संविधान सभा का भी गठन भी हो चुका है,

परन्तु अभी तक नेपाल में लोकतंत्र की ऐसी व्यवस्था नहीं बन सकी है जो सर्वसम्मत हो। नेपाल में निर्मित नया संविधान भी विवादास्पद है, इसे लेकर नेपाल के मधेसी क्षेत्र के लोगों ने लम्बे समय तक आन्दोलन चलाया और भारत–नेपाल सीमा पर नाकेबंदी किये रखा। अंततः सरकार द्वारा संविधान संशोधन के आश्वासन मिलने के बाद यह आन्दोलन समाप्त हो गया है परन्तु यह अंतिम स्थिति नहीं है। अतः नेपाल में अभी भी अस्थिरता व्याप्त है।

नेपाल में माओवाद और इसका आन्तरिक तथा वाह्य प्रभाव

नेपाल में माओवाद की शुरुआत 1996 ई. में एक जनयुद्ध के रूप में हुई, तब से लेकर इसने नेपाल के समाज और राजनीति को व्यापक स्तर पर प्रभावित किया है। जब माओवाद की शुरुआत हुई तब इसे किसी भी राजनीतिक दल ने गंभीरता से नहीं लिया उनका मानना था कि यह एक वर्ष के अन्दर समाप्त हो जायेगा। परन्तु ये राजनीतिक दल नेपाल में उठ रही असंतोष की उस ज्वाला को नहीं देख सके जिसने नेपाल में माओवाद के बढ़ने के लिए आग में घी का काम किया।

नेपाल के साथ यह दुर्भाग्य रहा है कि वहां के लोगों और उनकी आवश्यकताओं को न तो वहां के शासकों ने पहचाना और न ही वहां के राजनीतिक वर्ग ने। यही कारण रहा कि नेपाल जैसे गरीब देश में जहाँ लोग अपनी मूलभूत आवश्यकताओं से वंचित थे, माओवाद लोगों का विश्वास जीतने में सफल रहा। इतिहास में ऐसे अनेक उदाहरण देखे जा सकते हैं जब शासन से इतर रहकर किसानों और मजदूरों को आधार बनाकर सशस्त्र संघर्ष छेड़ने की शुरुआत की गयी और आगे चलकर राजनीतिक हस्तक्षेप तक इसे पहुंचा दिया गया, नेपाल में माओवाद भी इसी प्रकार के उदाहरण में से एक है।

उपर्युक्त स्थिति के बावजूद हमें यह समझना होगा कि भले ही नेपाल की परिस्थिति ने नेपाल में माओवाद हेतु उर्वर भूमि तैयार किया था, परन्तु उसमें बीजारोपण बाहर से किया गया अर्थात् नेपाल में माओवाद चीन द्वारा प्रायोजित एवं समर्थित रहा है। चीन के द्वारा ही नेपाल के माओवाद को हथियार दिया गया व उनका वित्त–पोषण किया गया, जिस कारण नेपाल की उर्वर भूमि में यह अति शीघ्र विकसित हो गया। जिस माओवाद के बारे में नेपाल की राजनीतिक पार्टियों का मानना था कि यह कुछ महीनों में समाप्त हो जायेगा, उसने जल्द ही पूरे नेपाल पर अपना प्रभाव स्थापित कर लिया।

नेपाल में माओवाद का बुरा असर भारत–नेपाल सम्बन्ध के साथ–साथ भारत की आन्तरिक सुरक्षा पर भी पड़ा। चीन समर्थित होने के कारण माओवाद द्वारा सदैव ही भारत के सम्बन्ध में नकारात्मक बातें नेपाल में प्रसारित की जाती रहीं, दूसरे नेपाली माओवाद और भारत में नक्सलवाद के बीच गठजोड़ ने भारत की आन्तरिक सुरक्षा में चुनौती उत्पन्न किया।

भारत के प्राकृतिक मित्र के रूप में नेपालः

भारत और नेपाल के बीच विभिन्न आधारों पर संबंधों की स्वाभाविक स्थिति की हमने पहले ही चर्चा कर ली है और इस आधार पर हमने यह बताने का भी प्रयास किया है कि नेपाल और भारत के बीच ऐसे सम्बन्ध हैं जो बहुत ही गहरे जमे हुए हैं, ये जीवन के प्रत्येक पक्ष को अपने में समाहित करते हैं। ऐसे में इन दोनों देशों के बीच संबंधों का गहरा होना स्वाभाविक है। परन्तु हम इस बात से इंकार नहीं कर सकते कि वाह्य कारक जब ज्यादा प्रभावी हो जाते हैं तो मजबूत से मजबूत पत्थर में भी दरार पड़ जाती है, भारत–नेपाल संबंधों की स्थिति भी कुछ ऐसी ही है।

जो देश इतने गहरे आधार पर एक दूसरे से जुड़े हों, परन्तु राजनीतिक कारणों से यदि इनमें अच्छे सम्बन्ध नहीं बन विकसित हो पायें तो इसे हम भारत की कूटनीतिक हार कहें तो कोई गलत नहीं होगा। क्योंकि किसी देश की विदेश–नीति के निर्धारण की पूर्व शर्त उस देश में एक स्थिर शासन व्यवस्था होती है जो कि नेपाल में नहीं रही है। इसके अतिरिक्त भारत हर स्तर पर नेपाल से बड़ा देश है ऐसे में नेपाल को बराबरी का दर्जा देकर उसके मनोवैज्ञानिक भय कम करने की जिम्मेदारी भी भारत की ही है। अंतिम बात यह है कि नेपाल में बढ़ते चीनी प्रभाव को कम करने में भारत द्वारा कोई प्रभावी कदम नहीं उठाये गये।

आज की परिस्थिति के अनुरूप नेपाल अपनी इच्छा के विरुद्ध चीन के साथ सम्बन्ध बनाने को बाध्य है। नेपाल की एक राजनीतिक पार्टी के नेता से बातचीत के दौरान उन्होंने मुझे बताया कि नेपाल और चीन की दोस्ती बिलकुल अस्वाभाविक है, ऐसा सिर्फ इसलिए हो रहा है कि भारत नेपाल को अपने विश्वास में लेने में असफल रहा है। उनका कहना था कि चीन और नेपाल में खान–पान, वस्त्र, भाषा, संस्कृति आदि सभी आधारों पर बहुत अधिक असमानता है। नेपाल का कोई भी व्यक्ति चीन में असहज महसूस करता है, जबकि भारत में उसे किसी भी प्रकार का फर्क नहीं नजर आता है। यद्यपि उपर्युक्त बातें सत्य हैं परन्तु ये एक पक्ष हैं।

दूसरा पक्ष यह है कि चीन का नेपाल पर प्रभाव बहुत पहले से ही देखने को मिलता है। 1955 ई. में जब नेपाल में राजतन्त्र था, उस समय के शासक का झुकाव उसी समय चीन से बढ़ने लगा था और भारत–नेपाल सम्बन्ध उस समय कटु हो चुके थे। लेकिन उस समय की विशेष बात यह थी कि यह कटुता शासक वर्ग तक ही सीमित थी, इसका प्रभाव आम जन–मानस तक नहीं पहुंचा था। कालान्तर मे यह कार्य माओवादियों द्वारा संपन्न किया गया। उन्होंने न सिर्फ राजशाही के विरुद्ध आन्दोलन चलाया बल्कि भारत विरोधी प्रचार में भी लगे रहे और जब हिंसा का मार्ग त्यागकर वे राजनीति में आये तो वे भारत विरोधी प्रचार और व्यापक स्तर पर करने लगे हैं। इस कार्य में अनेक घटनाओं ने भी अपनी भूमिका का निर्वहन किया, जिनमें हाल ही में संविधान में संशोधन को लेकर चले मधेशी आन्दोलन ने पर्वतीय क्षेत्र में रहने वाले नेपाली लोगों के मन में भारत के प्रति नकारात्मक भाव उत्पन्न किया है।

उपर्युक्त बातों के होते हुए भी भारत–नेपाल के सम्बन्ध में सुधार हेतु सरकार द्वारा प्रयास किया जा रहा है। नेपाल में आये भूकंप के बाद भारत सरकार ने सबसे पहले सहायता उपलब्ध कराकर नेपाल को अपनी महत्ता का अहसास करा दिया। वर्तमान भारत सरकार पड़ोसी देशों के साथ सम्बन्ध को लेकर अधिक प्रयासरत है।

निष्कर्ष

निश्चित तौर पर भारत और नेपाल के संबंधों की वर्तमान स्थिति को हम देखते हैं तो हमें हताशा हाथ लगती है, परन्तु हमें इस बात को ध्यान में रखना की इस संबंधों में सबसे बड़ी बाधा चीन है। अतः यदि हम नेपाल में चीन की उपस्थिति को नियंत्रित करने में सफल हो सकेंगे तो भारत और नेपाल सबंध पुनः अच्छी स्थिति में आ सकते हैं। 1950 ई. की भारत–नेपाल मित्रता की संधि दोनों देशों के बीच ऐतिहासिक घनिष्टता को दिखाती है। निश्चित तौर पर भारत द्वारा भी अतीत में कुछ ऐसी गलतियाँ हुई है जिन्हें अब सुधारने की आवश्यकता है। इस क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण प्रयास गुजराल–सिद्धांत के अंतर्गत किया गया था, जिसके अनेक सकारात्मक परिणाम भी निकले। वर्तमान सरकार के द्वारा भी 'पड़ोसी पहले' की नीति पर कार्य किया जा रहा है, इसके अंतर्गत ही नयी सरकार के प्रधानमंत्री मोदी ने अपनी पहली विदेश–यात्रा भूटान के लिए की। नेपाल में आये भूकंप पर भारत की सक्रियता और सहयोग ने इसे मजबूती प्रदान की है। अतः भारत–नेपाल सम्बन्ध का भविष्य उज्ज्वल होने की पूर्ण सम्भावना है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *Acharya Y. N.And Uprety N. P. (1994) 'An Outline History of Nepal' Ekta Book distributers Pvt. Ltd., Kathmandu, Nepal.*
2. *VermaA. S.(2005) 'Nepal se Jude Kuch Sawal' Samkaleen Tisari Duniya, Noida.*
3. *VermaA. S., (2001) 'Rolpa se Dolpa Tak: Nepal ka MaowadiAndolan', Samkalin Tisari Duniya, Noida.*
4. *Whelpton J. (2005),A History of Nepal, Cambridge University Press, U.K.*
5. *https://en.wikipedia.org/wiki/Politics_of_Nepal*
6. *http://mea.gov.in/in-focus-article-hi.htm?23744/IndiaNepal+ties+Mapping+New+Horizons*
7. *http://thediplomat.com/tag/india-nepal-relations/*